Impact Factor (QJIF): 8.38 E-ISSN: 2583-7206, P-ISSN: 3049-2432

International Journal of All Subject Research

Received: 12/March/2026 IJASR: 2026; 5(3):38-40 Accepted: 20/April/2026

समाजशास्त्र एवं शिक्षा के मध्य अंतर्संबंध

[*1]डॉ. राजेश तिवारी और [2]सत्य नरायन यादव

[*1]सहायक प्राध्यापक, विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग, ओरियंटल यूनिवर्सिटी, इंदौर, मध्य प्रदेश, भारत।

[2]सहायक प्राध्यापक, शिक्षा विभाग, स्व. गुलाब बाई यादव स्मृति शिक्षा महाविद्यालय, बोरावां (खरगोन), मध्य प्रदेश, भारत।

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र 'समाजशास्त्र और शिक्षा के अंतर्संबंधों' का एक अत्यंत सूक्ष्म और व्यापक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। इस अध्ययन का केंद्रीय विषय इस तथ्य को उजागर करना है कि समाज और शिक्षा कोई पृथक इकाइयाँ नहीं हैं, बल्कि एक-दूसरे के पूरक और मार्गदर्शक हैं। शोध के माध्यम से यह स्थापित करने का प्रयास किया गया है कि शिक्षा का अर्थ मात्र साक्षरता या किताबी ज्ञान तक सीमित नहीं है; अपितु यह एक जीवंत 'सामाजिक प्रक्रिया' है, जो व्यक्ति को समाज के एक सक्रिय और योग्य सदस्य के रूप में ढालती है। जहाँ समाजशास्त्र हमें सामाजिक संरचना, उसकी जटिलताओं और अंतर्संबंधों की गहरी समझ प्रदान करता है, वहीं शिक्षा उस संरचना में आवश्यक सुधार लाने, उसे स्थिरता प्रदान करने और निरंतरता बनाए रखने का एक सशक्त माध्यम बनती है। यह पत्र सामाजीकरण, सांस्कृतिक संचरण और सामाजिक गतिशीलता जैसे महत्वपूर्ण समाजशास्त्रीय पहलुओं पर विस्तृत प्रकाश डालता है। शोध यह सिद्ध करता है कि शिक्षा ही वह यंत्र है जो व्यक्ति को उसकी जन्मजात पहचान की सीमाओं से मुक्त कर उसे समाज में एक नई पहचान (अर्जित स्थिति) दिलाने में सक्षम बनाती है। इसके अतिरिक्त, यह शोध पत्र स्पष्ट करता है कि शिक्षा किस प्रकार समाज की सांस्कृतिक विरासत को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक हस्तांतरित करती है और साथ ही आधुनिकता की चुनौतियों के अनुरूप उसका शोधन (Refining) भी करती है। यह अध्ययन इस बात पर बल देता है कि एक न्यायपूर्ण, प्रगतिशील और उन्नत समाज के निर्माण के लिए शिक्षा की नीतियों और समाजशास्त्रीय सिद्धांतों के मध्य एक सुदृढ़ समन्वय होना अनिवार्य है। बिना समाजशास्त्रीय आधार के शिक्षा दिशाहीन हो सकती है, और बिना शिक्षा के समाज का विकास अवरुद्ध हो सकता है। यह शोध पत्र न केवल छात्रों और समाजशास्त्रियों के लिए उपयोगी है, बल्कि समाज के सर्वांगीण विकास की दिशा में एक वैचारिक मार्गदर्शिका का कार्य भी करता है।

मुख्य शब्द: समाजशास्त्र, शिक्षा-प्रणाली, सामाजिक-संरचना, सांस्कृतिक-विरासत, सामाजिक-गतिशीलता, शैक्षिक-समाजशास्त्र।

1. प्रस्तावना

समाजशास्त्र और शिक्षा के मध्य अटूट और गहरा अंतर्संबंध है; ये दोनों एक ही सिक्के के दो पहलुओं की भाँति हैं जो एक-दूसरे को अर्थ और पूर्णता प्रदान करते हैं। समाजशास्त्र जहाँ 'समाज के विज्ञान' के रूप में सामाजिक संरचना, संबंधों, संस्थाओं और मानवीय व्यवहार के प्रतिमानों का वैज्ञानिक अध्ययन करता है, वहीं शिक्षा वह 'प्रक्रिया और साधन' है जिसके माध्यम से समाज की इस संरचना को सुधारा, परिष्कृत और निरंतर बनाए रखा जाता है। समाजशास्त्र हमें यह बताता है कि समाज 'क्या है', जबकि शिक्षा हमें यह मार्ग दिखाती है कि समाज को 'कैसा होना चाहिए'।

शिक्षा की प्रक्रिया कभी भी शून्य में घटित नहीं होती; यह सदैव एक सामाजिक परिवेश में संचालित होती है। प्रत्येक समाज अपनी आवश्यकताओं, आदर्शों और भविष्य की योजनाओं के अनुसार ही अपनी शिक्षा-प्रणाली का ढांचा तैयार करता है। यदि समाजशास्त्र समाज की 'आत्मा' का अध्ययन है, तो शिक्षा उस आत्मा को संस्कारित करने वाली 'कार्यप्रणाली' है। शिक्षा का मुख्य उद्देश्य व्यक्ति का सर्वांगीण विकास करना है, लेकिन यह विकास तभी सार्थक है जब वह व्यक्ति को समाज के एक उपयोगी और उत्तरदायी अंग के रूप में तैयार करे। इसे ही 'सामाजीकरण' की प्रक्रिया कहा जाता है, जहाँ शिक्षा व्यक्ति को समाज की संस्कृति, नैतिकता और नियमों से परिचित कराती है।

अंततः, शिक्षा समाजशास्त्र के सिद्धांतों को व्यावहारिक रूप देती है। समाज में आने वाले बदलाव—चाहे वे तकनीकी हों या वैचारिक—शिक्षा के माध्यम से ही जन-जन तक पहुँचते हैं। बिना सामाजिक आधार के शिक्षा दिशाहीन हो जाती है और बिना शिक्षा के समाज जड़ और प्रगतिहीन हो जाता है। इन दोनों का अंतर्संबंध समाज की प्रगति और मानवता के विकास के लिए अनिवार्य है।

2. शिक्षा का समाजशास्त्र (Sociology of Education)

शिक्षा का समाजशास्त्र वह महत्वपूर्ण शाखा है जो शिक्षा को एक सामाजिक प्रक्रिया और संस्थान के रूप में देखती है। यह इस पर विचार करता है कि समाज की संरचना, जाति और आर्थिक स्थिति

*Corresponding Author: डॉ. राजेश तिवारी

शिक्षा की पहुँच को कैसे प्रभावित करती है। एमिल दुर्खीम, जिन्हें इस विषय का जनक माना जाता है, का तर्क था कि शिक्षा का मुख्य कार्य व्यक्ति को एक 'सामाजिक इकाई' के रूप में ढालना है। शिक्षा का समाजशास्त्र हमें यह समझने में मदद करता है कि विद्यालय केवल चारदीवारी नहीं हैं, बल्कि वे समाज का एक छोटा रूप (Microcosm) हैं। जैसा कि समाजशास्त्री ओटावे (Ottaway) ने कहा है कि शिक्षा का कार्य केवल व्यक्ति का विकास करना नहीं, बल्कि उसे समाज के अनुकूल बनाना भी है। यह विषय शोध करता है कि कैसे शिक्षा प्रणाली सामाजिक असमानताओं को दूर कर सकती है या कभी-कभी उन्हें बढ़ावा देती है। संक्षेप में, शिक्षा का समाजशास्त्र वह दर्पण है जो हमें दिखाता है कि शिक्षा किस तरह समाज की दिशा बदल रही है।

3. सांस्कृतिक संचरण (Cultural Transmission)

सांस्कृतिक संचरण का अर्थ है समाज की विरासत, परंपराओं और मूल्यों को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाना। समाजशास्त्र में शिक्षा को इस कार्य के लिए सबसे महत्वपूर्ण 'वाहक' माना गया है। शिक्षा यहाँ एक सेतु का कार्य करती है जो अतीत के अनुभवों को भविष्य तक पहुँचाती है। इस प्रक्रिया पर बल देते हुए ओटावे ने पुनः स्पष्ट किया है कि संस्कृति का अर्थ उन व्यवहारों के संपूर्ण योग से है जो एक समाज अपनी आने वाली पीढ़ी को सौंपता है। शिक्षा के माध्यम से ही बालक को अपनी भाषा, कला और इतिहास का बोध होता है। जैसा कि एफ. जे. ब्राउन (F.J. Brown) का मानना है कि शिक्षा वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा समाज की सांस्कृतिक उपलब्धियों को निरंतरता प्रदान की जाती है। शिक्षा न केवल संस्कृति का संरक्षण करती है, बल्कि अप्रासंगिक परंपराओं को त्यागने और नवीन मूल्यों को अपनाने की प्रेरणा भी देती है।

4. सामाजिक नियंत्रण (Social Control)

समाजशास्त्र के दृष्टिकोण से, समाज को सुचारू रूप से चलाने के लिए नियंत्रण अनिवार्य है और शिक्षा इसका सबसे प्रभावशाली अनौपचारिक साधन है। जहाँ कानून बाहरी नियंत्रण रखते हैं, वहीं शिक्षा व्यक्ति के भीतर 'आंतरिक नियंत्रण' विकसित करती है। इस संदर्भ में रॉस (Ross) का प्रसिद्ध कथन है कि शिक्षा वह साधन है जो समाज के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए व्यक्ति को सामाजिक रूप से नियंत्रित करती है। शिक्षा व्यक्ति के व्यक्तित्व का इस प्रकार निर्माण करती है कि वह समाज के नैतिक ढाँचे को स्वेच्छा से स्वीकार कर लेता है। प्रसिद्ध समाजशास्त्री मैकाइवर एवं पेज (MacIver and Page) के अनुसार सामाजिक नियंत्रण का अर्थ उस ढंग से है जिससे संपूर्ण सामाजिक व्यवस्था एकता बनाए रखती है और एक सुव्यवस्थित ढांचे के रूप में कार्य करती है। इस प्रकार, शिक्षा व्यक्ति को केवल दंड के डर से नहीं, बल्कि तर्क और नैतिकता के आधार पर सही व्यवहार करना सिखाती है।

5. सामाजिक गतिशीलता (Social Mobility)

समाजशास्त्र में 'सामाजिक गतिशीलता' का अर्थ व्यक्ति की सामाजिक स्थिति या पद (Status) में परिवर्तन से है। शिक्षा इस गतिशीलता को संभव बनाने वाला सबसे शक्तिशाली यंत्र है। प्राचीन समाजों में व्यक्ति की स्थिति उसके जन्म से तय होती थी, जिसे 'प्रदत्त स्थिति' कहते हैं, लेकिन आधुनिक समाज में शिक्षा व्यक्ति को 'अर्जित स्थिति' प्राप्त करने का अवसर देती है। जब एक निर्धन परिवार का बच्चा उच्च शिक्षा प्राप्त कर डॉक्टर या प्रशासनिक अधिकारी बनता है, तो यह शिक्षा के कारण होने वाली 'ऊर्ध्वमुखी गतिशीलता' (Upward Mobility) है। समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से शिक्षा ही वह माध्यम है जो समाज के बंद ढाँचे को तोड़कर उसे 'खुला समाज' बनाती है, जहाँ प्रतिभा को पहचान मिलती है।

6. सामाजिक परिवर्तन (Social Change)

समाजशास्त्र में शिक्षा सामाजिक परिवर्तन का सबसे बड़ा उत्प्रेरक (Catalyst) है। जब भी समाज अपनी पुरानी जड़ता से बाहर निकलता है, तो उसके पीछे शिक्षा की तार्किक शक्ति होती है। इस संदर्भ में प्रसिद्ध समाजशास्त्री ओटावे (Ottaway) का कथन अत्यंत सटीक है कि सामाजिक परिवर्तन के परिणामस्वरूप ही शैक्षिक परिवर्तन होते हैं, किन्तु शिक्षा भी सामाजिक परिवर्तन की गति को तीव्र करने में सहायक होती है। ऐतिहासिक रूप से सती प्रथा और छुआछूत जैसी कुरीतियों के विरुद्ध चेतना शिक्षा के कारण ही जागी। शिक्षा न केवल नए वैज्ञानिक विचारों को बढ़ावा देती है, बल्कि यह समाज का केवल 'अनुकरण' नहीं करती, बल्कि उसे नई दिशा भी प्रदान करती है।

7. सामाजीकरण (Socialization)

सामाजीकरण वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से एक जैविक प्राणी 'सामाजिक प्राणी' में परिवर्तित होता है। परिवार के बाद विद्यालय ही वह स्थान है जहाँ बच्चे का गहन सामाजीकरण होता है। सामाजीकरण और शिक्षा के संबंध पर समाजशास्त्र के जनक एमिल दुर्खीम (Emile Durkheim) ने कहा है कि शिक्षा भावी पीढ़ी का व्यवस्थित सामाजीकरण है। इसी प्रकार विद्वान ब्राउन (Brown) के अनुसार शिक्षा वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा बालक समाज के साथ अनुकूलन करना सीखता है। विद्यालय में बच्चा सहयोग, अनुशासन और समूह भावना जैसे गुण सीखता है, जो उसे एक जिम्मेदार नागरिक के रूप में विकसित करते हैं।

8. व्यक्तित्व का विकास (Personality Development)

समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से व्यक्तित्व का विकास व्यक्ति और समाज के बीच होने वाली निरंतर अंतःक्रिया का परिणाम है। शिक्षा वह माध्यम है जो व्यक्ति की सुप्त शक्तियों को जाग्रत कर उसे समाज के योग्य बनाती है। प्रसिद्ध विद्वान टी.पी. नन (T.P. Nunn) के अनुसार शिक्षा का मुख्य कार्य व्यक्तित्व का पूर्ण विकास करना है ताकि व्यक्ति अपनी पूर्ण क्षमता के साथ मानव जीवन में अपना मौलिक योगदान दे सके। शिक्षा व्यक्ति को आत्म-अनुशासन और आत्मविश्वास सिखाती है। जब एक व्यक्ति शिक्षित होता है, तो उसका दृष्टिकोण व्यापक हो जाता है और वह सामाजिक कल्याण के प्रति सजग होकर समाज का एक प्रभावशाली अंग बनता है।

9. लोकतांत्रिक मूल्यों का प्रसार (Democratic Values)

शिक्षा और लोकतंत्र एक-दूसरे पर निर्भर हैं और समाजशास्त्र मानता है कि लोकतंत्र की सफलता उसके नागरिकों की शिक्षा पर टिकी है। प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री जॉन डीवी (John Dewey) का कथन यहाँ अत्यंत महत्वपूर्ण है कि शिक्षा लोकतंत्र की दाई (Midwife) है और इसके बिना लोकतंत्र का अस्तित्व संभव नहीं है। शिक्षा समाज में समानता, स्वतंत्रता और न्याय जैसे मूल्यों को स्थापित करती है और नागरिकों में आलोचनात्मक सोच (Critical Thinking) विकसित करती है। यह एक ऐसे 'समतावादी समाज' का निर्माण करती है जहाँ विशेषाधिकारों के स्थान पर योग्यता और मानवीय मूल्यों को प्रधानता दी जाती है।

10. आर्थिक विकास (Economic Development)

समाजशास्त्र में शिक्षा को केवल ज्ञान अर्जन का साधन नहीं, बल्कि 'मानवीय पूँजी' के निर्माण का मुख्य आधार माना जाता है। शिक्षा व्यक्ति की कार्यकुशलता और उत्पादकता में वृद्धि करती है, जो अंततः समाज के आर्थिक ढांचे को मजबूती प्रदान करती है। इस संदर्भ में अर्थशास्त्री और समाजशास्त्री एडम स्मिथ ने स्पष्ट किया था कि एक शिक्षित और कुशल व्यक्ति उस बहुमूल्य मशीन के समान

है, जो समाज के लिए अधिक उत्पादन और लाभ सुनिश्चित करती है। शिक्षा न केवल श्रम-विभाजन को सरल बनाती है, बल्कि यह व्यक्ति को आधुनिक व्यवसायों के लिए तैयार कर गरीबी के चक्र को तोड़ने में भी मदद करती है।

11. राष्ट्रीय एकीकरण (National Integration)

भारत जैसे विविधतापूर्ण समाज में, राष्ट्रीय एकीकरण के लिए शिक्षा सबसे अनिवार्य तत्व है। समाजशास्त्र के अनुसार, शिक्षा विभिन्न धर्मों, जातियों और क्षेत्रीय पहचानों के बीच एक 'साझा राष्ट्रीय पहचान' विकसित करने का कार्य करती है। भारत के पूर्व राष्ट्रपति और महान शिक्षाविद् डॉ. एस. राधाकृष्णन ने इस पर जोर देते हुए कहा था कि राष्ट्रीय एकीकरण ईंट-गारे से नहीं बन सकता, बल्कि इसे लोगों के दिमाग और दिलों में शिक्षा के माध्यम से पैदा किया जाना चाहिए। शिक्षा के माध्यम से ही नागरिक अपने राष्ट्रीय प्रतीकों और संविधान के प्रति सम्मान सीखते हैं, जिससे समाज में 'हम-भावना' (We-feeling) पुख्ता होती है।

12. सामाजिक न्याय और समानता (Social Justice and Equality)

समाजशास्त्र में शिक्षा को सामाजिक न्याय सुनिश्चित करने का सबसे प्रभावी माध्यम माना गया है। यह समाज के वंचित और पिछड़े वर्गों को सशक्त बनाकर उन्हें मुख्यधारा से जोड़ती है। जैसा कि प्रसिद्ध समाजशास्त्री दुर्खीम ने संकेत दिया है कि शिक्षा समाज के नैतिक आधारों को मजबूत कर असमानता को कम करती है। इसी विचार को आगे बढ़ाते हुए डॉ. बी.आर. अम्बेडकर ने शिक्षा को 'शेरनी का दूध' कहा था, जिसका अर्थ है कि शिक्षा ही वह शक्ति है जो व्यक्ति को अपने अधिकारों के लिए लड़ना और समाज में समानता प्राप्त करना सिखाती है। शिक्षा के माध्यम से जब अवसर सभी के लिए समान होते हैं, तो जाति और वर्ग के आधार पर होने वाला भेदभाव स्वतः समाप्त होने लगता है।

13. आधुनिकीकरण (Modernization)

शिक्षा आधुनिकीकरण की प्रक्रिया का मुख्य आधार है। समाजशास्त्र के अनुसार, आधुनिकीकरण का अर्थ केवल नई तकनीक अपनाना नहीं, बल्कि दृष्टिकोण का वैज्ञानिक और तर्कसंगत होना है। इस संदर्भ में डॉ. एम.एन. श्रीनिवास जैसे समाजशास्त्री मानते हैं कि शिक्षा ने भारतीय समाज में पश्चिमीकरण और आधुनिकीकरण की लहर को गति दी है। शिक्षा पुराने रुढ़िवादी विचारों को हटाकर नए मूल्यों, जैसे—मानवतावाद और धर्मनिरपेक्षता को स्थापित करती है। यह समाज को 'परंपरा' से 'आधुनिकता' की ओर ले जाने वाला वह मार्ग है, जो विकास के नए द्वार खोलता है।

14. नेतृत्व के गुणों का विकास (Development of Leadership)

किसी भी समाज की प्रगति उसके नेतृत्व पर निर्भर करती है, और शिक्षा कुशल नेतृत्व तैयार करने की नर्सरी है। समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से, शिक्षा व्यक्ति के भीतर उत्तरदायित्व की भावना और निर्णय लेने की क्षमता विकसित करती है। प्लेटो ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'रिपब्लिक' में भी इसी बात पर जोर दिया था कि एक आदर्श राज्य के लिए शासकों का शिक्षित होना अनिवार्य है। शिक्षा न केवल राजनीतिक क्षेत्र में, बल्कि सामाजिक, आर्थिक और बौद्धिक क्षेत्रों में भी ऐसे नेता तैयार करती है जो समाज को सही दिशा दे सकें और संकट के समय उचित मार्ग दिखा सकें।

15. निष्कर्ष (Conclusion)

उपरोक्त संपूर्ण विवेचन के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि समाजशास्त्र और शिक्षा के मध्य एक अटूट, जीवंत और द्वंद्वात्मक अंतर्संबंध विद्यमान है। ये दोनों विषय एक-दूसरे के पूरक ही नहीं, बल्कि एक-दूसरे के अस्तित्व की अनिवार्य शर्त भी हैं। समाजशास्त्र जहाँ हमें समाज की जटिल संरचना, उसकी सांस्कृतिक जड़ों और समकालीन आवश्यकताओं का गहन बोध कराता है, वहीं शिक्षा उन सामाजिक लक्ष्यों और आवश्यकताओं को धरातल पर उतारने का सबसे सक्रिय एवं सशक्त उपकरण है। समाजशास्त्र हमें 'सामाजिक यथार्थ' दिखाता है, तो शिक्षा उस यथार्थ को बेहतर बनाने का 'सामाजिक स्वप्न' प्रदान करती है।

प्रसिद्ध समाजशास्त्री ब्राउन ने इस संदर्भ में अत्यंत सटीक निष्कर्ष दिया है कि, "शिक्षा एक सचेत और सोद्देश्य सामाजिक प्रक्रिया है, जो व्यक्ति के व्यवहार में समाज की अपेक्षाओं और आदर्शों के अनुसार वांछित परिवर्तन लाती है।" इसका अर्थ यह है कि शिक्षा केवल ज्ञान का हस्तांतरण नहीं है, बल्कि यह वह भट्टी है जिसमें समाज के भविष्य का निर्माण होता है। शिक्षा के अभाव में समाज अंधकारमय और दिशाहीन हो जाता है, क्योंकि उसे सही-गलत का विवेक देने वाली कोई शक्ति नहीं बचती। दूसरी ओर, यदि शिक्षा का कोई सामाजिक आधार न हो, तो वह केवल किताबी और अर्थहीन बनकर रह जाती है, जिसका वास्तविक जीवन से कोई जुड़ाव नहीं होता।

आज के बदलते वैश्विक परिवेश में, जहाँ तकनीक और वैश्वीकरण समाज को नई चुनौतियाँ दे रहे हैं, समाजशास्त्र और शिक्षा का समन्वय और भी महत्वपूर्ण हो गया है। एक न्यायपूर्ण, समतावादी और प्रगतिशील समाज के निर्माण के लिए यह अनिवार्य है कि शिक्षा प्रणाली समाज की बदलती धड़कनों को समझे और समाजशास्त्र शिक्षा को मानवीय मूल्यों के संरक्षण का आधार प्रदान करे। अंततः, यह स्पष्ट है कि शिक्षा वह सेतु है जिस पर चलकर समाज अपने वर्तमान से भविष्य की ओर यात्रा करता है। बिना सामाजिक चेतना के शिक्षा अधूरी है और बिना शिक्षा के समाज का विकास असंभव है। इन दोनों का सामंजस्य ही मानवता के कल्याण और राष्ट्र की उन्नति का एकमात्र मार्ग है।

संदर्भ सूची

1. ओड, एल.के. (1994): शिक्षा के समाजशास्त्रीय पृष्ठभूमि, राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
2. गुप्ता, एस.पी. (2015): शिक्षा के दार्शनिक और समाजशास्त्रीय आधार, शारदा पुस्तक भवन।
3. पाठक, पी.डी. (2010): भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएँ, अग्रवाल पब्लिकेशन्स।
4. पांडे, रामशकल (2005): शिक्षा के समाजशास्त्रीय आधार, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
5. सिंह, रमन बिहारी (2002): शिक्षा का समाजशास्त्र, विवेक प्रकाशन, दिल्ली।
6. NCERT (2022): भारतीय समाज (कक्षा 12), शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली।
7. Dewey, John (1916): Democracy and Education, Macmillan, New York.
8. Durkheim, Emile (1956): Education and Sociology, Free Press, New York.
9. Gore, M.S. (1967): Papers in the Sociology of Education in India, NCERT.
10. Haralambos, M. (2014): Sociology: Themes and Perspectives, Oxford University Press.
11. Rao, M.S.A. (1974): Sociology of Education in India, Rawat Publications, Jaipur.
12. Srinivas, M.N. (1966): Social Change in Modern India, University of California Press।